RBH

समकालीन साहित्य में स्त्री लेखन

Principal
Rajkiya PG Mahila Mahavidyalaya
JAIPUR

डॉ. मधुबाला सांखला
डॉ. संजू श्रीमाली

Scanned with CamScanner

प्रकाशक :

राज पब्लिशिंग हाउस

44, परकोटी, गोविन्द मार्ग, जयपुर - 3020014

फोन : 0141-2622141 (आ.), 2614363 (नि.)

Cell : 09414051782

E-mail : shreerajpublishing@gmail.com

© सम्पादक

समकालीन साहित्य में स्त्री लेखन

प्रथम संस्करण, 2017

ISBN : 978-93-81005-23-1

Price : ₹ 1200.00

लेखक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। पुस्तक के किसी भी भाग को प्रकाशक व लेखक की पूर्वानुमति के बिना नहीं छापा जा सकता है। पुस्तक के किसी भी भाग को इलेक्ट्रॉनिक, इलेक्ट्रोस्टेटिक, मैग्नेटिक, सीडी, टेप, मैकेनिकल, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग, ध्वनि अथवा अन्य किसी माध्यम पर प्रकाशक व लेखक की पूर्वानुमति के बिना संग्रहीत भी नहीं किया जा सकता है।

मुद्रक :

शीतल ऑफसेट प्रिन्टर्स, जयपुर

Principal
Kanoria PG Mahila Mahavidyalaya
JAIPUR

12. "महिला सशक्तिकरण एवं अधिकार"
—डॉ. स्वीटी माथुर 126

13. स्त्री की नियति : कूड़ा–कबाड़ा
— प्रतिभा सोनगरा 130

14. बेटी है तो वंश है
—संगीता रचियता, निधि अग्रवाल 137

15. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में : संगीत की स्वरलहरियों में नारी के गुंजायमान स्वर
—डॉ. रोजी श्रीवास्तव 143

16. नारी सशक्तिकरण की राह का स्वप्न और यर्थाथ
—अनिता गोदारा 147

17. "स्त्रियों की उपेक्षित अस्मिता, परिवर्तित बेड़ियाँ और स्त्रीवादी लेखन"
—डॉ. अलका रस्तोगी 152

18. आइने में कटरा बी आरजू
—मोहम्मद हुसैन डायर 158

19. जनतांत्रिक मूल्य और 'मित्रो मरजानी'
— मानवी गुप्ता 166

20. स्त्री लेखनः सामाजिक सरोकारों का विस्तृत धरातल
—डॉ. मीनाक्षी चौधरी 175

Principal
Kanoria PG Mahila Mahavidyalaya
JAIPUR

□□□

Scanned with CamScanner

12

"महिला सशक्तीकरण एवं अधिकार"

डॉ. स्वीटी माथुर

महिला की सुदृढ़ व सम्मानजनक स्थिति एक उन्नत, तथा मजबूत समाज की द्योतक होती है। जहाँ तक भारत का सम्बन्ध है यहां "यत्र नार्यस्तु पूज्यते रंमते तत्र देवता' का सूत्र वाक्य प्राचीनकाल से मान्य रहा है। वैदिककाल में भारत वर्ष में महिलाओं की स्थिति उच्च थी। उस काल में महिलाओं को पुरूषों के समकक्ष प्रतिष्ठा व सम्मान प्राप्त था। लेकिन उत्तर वैदिककाल से धीरे–धीरे महिलाओं की प्रस्थिति में ह्रास होने लगा। कर्मकाण्ड भोगवाद व अनेक सामाजिक कुरीतियों जैसे सतीप्रथा, पर्दाप्रथा, जोहर व बालविवाह के कारण महिलाओं की प्रस्थिति निरंतर गिरती गयी तथा इन्हें दोयम समझा जाने लगा।

लिंग आधारित यह भेदभाव भारतीय समाज (विशेषतः उत्तरी भारत) का यथार्थ बन गया। प्रकृति ने तो महिलाओं को शारीरिक रूप से पुरूषों कि तुलना में ज्यादा प्रतिरोधक क्षमता प्रदान करके स्त्री को जन्म देने जैसा मजबूत कार्य सौंप रखा है। परन्तु आज वैश्वीकरण के इस युग में परिस्थितयां अधिक बदल चूंकि हैं। महिलाओं ने अनेक मौकों पर अपनी शक्ति सम्पन्नता का अहसास कराया है। आज का समाज यह समझ चुका है कि विकास के कार्य में महिलाओं की सहभागिता के बिना वांछित लाभ प्राप्त करना अत्यन्त कठिन है।

संतान को जन्म देने व उनका पालन पोषण करके अपने अस्तित्व की रक्षा करने जैसे कुछ कारणों ने पुरूषों पर निर्भर बना दिया। परिणाम

* डॉ. स्वीटी माथुर (व्याख्याता समाज शास्त्र), कॉनोडिया महिला महाविद्यालय, जयपुर

Principal
Kanoria PG Mahila Mahavidyalaya
JAIPUR

Scanned with CamScanner